ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 16 अंक 34 कुल पृष्ठ-8 26 अगस्त से 1 सितम्बर, 2021 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 भा.कृ.-04

अमर उजाला समाचार पत्र समूह, हरियाणा के तत्वावधान में 75वें स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष्य में 'माँ तुझे प्रणाम' कार्यक्रम का शुभारम्भ करने के लिए महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक की मातूराम यज्ञशाला में सद्भावना यज्ञ का किया गया भव्य आयोजन

वैदिक संस्कृति किसी देश, जाति, धर्म, समाज या वर्ग विशेष के लिए नहीं, बल्कि मानव मात्र के उपकार के लिए है

– स्वामी आर्यवेश

जीवन में सामाजिक ज्ञान का खास महत्त्व होता है

– प्रो. राजवीर सिंह

75वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में अमर उजाला समाचार समूह हरियाणा की ओर से 'माँ तुझे प्रणाम' नामक प्रेरणादाई कार्यक्रम निरन्तर चार दिन तक चलाया गया। इस कार्यक्रम का शुभारम्भ 12 अगस्त, 2021 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा की मातूराम यज्ञशाला में सद्भावना यज्ञ के द्वारा किया गया। इस यज्ञ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किये गये। उनके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह विशिष्ट अतिथि एवं इस सम्पूर्ण कार्यक्रम के विशिष्ट सहयोगी प्रसद्धि नाड़ी वैद्य श्री सत्य प्रकाश आर्य एवं नगर के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री राजेश जैन सारस्वत अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द शोध पीठ के अध्यक्ष डॉ. रवि प्रकाश आर्य, अमर उजाला पत्र के अधिकारीगण, स्वामी देवमुनि जी एवं अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने यज्ञ को बड़ी विद्वता के साथ सम्पन्न कराया। इस पूरे कार्यक्रम के मुख्य यजमान के रूप में वैद्य सत्य प्रकाश आर्य जी ने दायित्व संभाला।

यज्ञ के उपरान्त अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि समाज में सद्भावना कैसे स्थापित हो इसके लिए हम सभी को सम्मिलित रूप से प्रयास करना चाहिए। सद्भावना हवन एक माध्यम है। समाज की उन्नति के लिए प्रत्येक व्यक्ति का प्रयास आवश्यक है। इसमें सैनिक, शिक्षक, विश्वविद्यालय व जनकल्याण के सभी प्रयास यज्ञ की श्रेणी में आते हैं। देश की उन्नति के लिए सभी धर्म के लोगों को आपस में मिलकर कार्य करना होगा तभी देश में भाईचारा एवं सद्भावना को बढ़ावा मिल सकेगा। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिकों को एकजुट होकर समाज में दबे–कुचले लोगों के विकास के लिए तथा देश की उन्नति के लिए कार्य करना होगा, तभी सही मायने में देश की उन्नति हो पायेगी। वेद सृष्टि के प्रारम्भ में आता है। हमारा देश सदैव से वेद पर आधारित मान्यताओं को मानता आया है। परन्तु बाद में अनेक मान्यताओं व विचारधाराओं ने जन्म ले लिया। प्राचीन भारतीय संस्कृति वैदिक संस्कृति किसी देश, जाति, धर्म, समाज या वर्ग विशेष के लिए नहीं है, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए है। वेद के प्रत्येक मन्त्र का उद्देश्य सभी के कल्याण व उत्थान का है।

वैदिक धर्म का तात्पर्य वेद पर आधारित धर्म से है। मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के विषय में वेदों में जो कुछ नियम और कर्त्तव्य बताये गये हैं उन्हीं का प्रतिपादन एवं समर्थन वैदिक धर्म करता है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि तक इसी वेदोक्त धर्म को मानते आये हैं और यही सत्य सनातन वैदिक धर्म है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी भी इसी धर्म के समर्थक और उपदेशक रहे हैं। उनका कोई नया मत या पंथ स्थापित करने का लेशमात्र भी उद्देश्य नहीं था। महाभारत से पूर्व तक जब तक संसार में वैदिक धर्म का बोलबाला रहा तब तक संसार में सुख, शांति रही। आज भी विश्व में यदि कोई सर्वमान्य मानव धर्म बन सकता है तो वह केवल वैदिक धर्म ही है।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

व्यक्तित्व निर्माण

– आनन्द प्रकाश गुप्त

^vlrk ek lnxe;] relk ek T;kfrxe;] eR;kek ver xe;A*

(हे प्रभु! मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।)

यदि हमारे मन में यह प्रश्न उठता है कि व्यक्तित्व का निर्माण क्यों? तो फिर यह प्रश्न अवश्य उठना चाहिये कि यह मनुष्य जीवन ही क्यों ? क्या इस जीवन का भी कोई यथेष्ट उद्देश्य हो सकता है, क्योंकि जब हम यह अनुभव करते हैं कि इस संसार में कोई भी वस्तु बेकार नहीं बनी है, प्रत्येक वस्तु सकारण है। प्रत्येक चर–अचर प्राणी एक दूसरे के सहजीवी हैं। सभी पदार्थ एक वलय चक्र के रूप में विद्यमान हैं तथा प्रत्येक जीवधारी का एक निश्चित जीवन चक्र है। सभी जीवों में धारित गुण भी लगभग समान हैं। इसी प्रकार प्राणियों के मनोभाव तथा उनके क्रमिक विकास में भी बहुत कुछ समानताएं पाई जाती है। हाँ! विभिन्न प्राणियों में हम पाते हैं कि किसी में गुणों की क्रियाशीलता कुछ कम है तो किसी में कुछ अधिक। इसी प्रकार हम पाते है कि जीवधारियों में प्रत्येक इन्द्रिय का जो भी विषय–गुण है, वह अवश्य ही इस परिवेश में कहीं विद्यमान हैं और इसी प्रकार जहाँ भी किसी तत्व की विद्यमानता है, वैसे ही गुणधर्म वाले जीव और पदार्थ वहाँ विद्यमान हैं। इसी प्रकार हम पाते हैं कि प्रत्येक संसार का कोई भी ऐसा पदार्थ, वस्तु या पेड़–पौधे अथवा प्राणी नहीं है, जिसके गुण –धर्म का प्रकृति में कोई सदुपयोग न हो। संसार में कुछ भी गुणहीन और सारहीन नहीं है। इस प्रकार हम पाते है कि इस मनुष्य जीवन के होने का कोई न कोई कारण अवश्य है और इसी कारण की खोज के लिए हमें इस पर चिंतन करने की आवश्यकता है, इस जीवन के उद्देश्य को जानने की आवश्यकता है और इस जीवन उद्देश्य को जानने के लिए आवश्यक है यथेष्ट दिशासूचक एक सार्थक पहल की। यह सार्थक पहल हमें यदि कहीं मिल सकती है तो वह हमारी मानसिक उत्क्रांति से ही संभव है। हमारी मानसिक चैतन्यता, इसकी सक्रियता ही हमें हमारे जीवनोद्देश्य को खोजने में मदद कर सकती है और यह चैतन्यता हमें प्राप्त हो सकती है मात्र तपोशील, स्वाध्यायी एवं आस्थापूर्ण, श्रद्धावान जीवन शैली से। हमारे सद्‌गुणी आचार हमारे सकारात्मक विचार और यथेष्ट आत्मशक्तिपूर्ण संकल्पित चरित्र से। इसलिए हमें अपने व्यक्तित्व निर्माण की ओर एकनिष्ट होकर लगनपूर्वक प्रयास करने की आवश्यकता है।

हमारा व्यक्तित्व ही मानव सभ्यता का दूसरा नाम है। हमारे पास यदि यथेष्ट चरित्र नहीं हो तो हमारी शक्तियों की अपेक्षा दुर्बलताएँ ही अधिक प्रभावी होंगी और हमारे सौभाग्य की तुलना में दुर्भाग्य ही अधिक बलशाली होगा। यह हमारा चरित्र ही है जो हमारे समाज के निर्माण का पूर्णतः जिम्मेदार है। हमारा चरित्र ही है जो हमें सामाजिक शान्ति–सामन्जस्य, सुख–संयम, सच्चाई, व ईमानदारी का अवदान देता है। आज के समय में जब हमारा समाज और हमारी युवा पीढ़ी इस ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रही है, हमें इस पर चिंतन करने और अपने रोजमर्रा के जीवन में उतारने की महती आवश्यकता है ताकि हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें और वे चारित्रिक विकृति तथा वितण्डावाद के गहरे संकट में न फंसे। विचार करें यदि हममें आपस में विश्वसनीयता, प्रेम, परोपकारिता, न्यायपराणयता, जैसे सद्‌गुण शून्य हो जायेंगे तो हमारे समाज में सभी ओर लड़ाई–झगड़े, उत्तेजना–उपद्रव, भ्रष्टाचार–अनैतिकता का ही बोलबाला होगा।

महान चिंतक और विचारक कन्फ्यूशियस का कथन है "अपने स्वयं के चरित्र का निर्माण तथा साथ ही दूसरों को भी वैसा ही करने में सहायता करना, स्वयं सफलता प्राप्त करने का प्रयास और दूसरों की भी सफलता में सहायक होना, सभी की एक साथ उन्नति अर्थात् सर्वोदय का सिद्धान्त है।"

समाज में सभी की उन्नति आवश्यक है। यदि कोई भी व्यक्ति पीछे छूट जाता है और उसका चरित्र गिरता है या वह सही मार्ग से भटकता है तो इसकी जिम्मेदारी प्रत्येक चिंतनशील और बुद्धि संपन्न व्यक्ति की ही है क्योकि जो बुद्धिशील और समाज के अधिष्ठाता है वही समाज को सही दिशा देने में सक्षम होते है। विभिन्न व्यक्तियों, समाजों एवं राष्ट्रों की आवश्यकताएँ भिन्न–भिन्न है। सबकी सफलता और उन्नति के अपने–अपने साधन और अपने अपने मार्ग हैं। जो कहीं पर समान हैं और कहीं पर भिन्न हैं। आज हम देखते हैं कि स्वार्थपरता के कारण यह किसी न किसी रूप में एक दूसरे की उन्नति के प्रतिकूल सिद्ध हो रहे हैं। आज आवश्यकता है सार्वभौमिक भलाई वाली सोच की और यह मात्र हमारे यथेष्ट चरित्र तथा श्रेष्ठ व्यक्तित्व से ही प्राप्त हो सकती है। एक मानवतावादी सोच ही सही मनुष्य का निर्माण कर सकती है और मात्र सही मनुष्य ही समस्त समस्याओं के निवारण में सहायक हो सकता है। कन्फ्यूशियस आगे भी कहते हैं कि "जिसमें मनुष्यत्व नहीं वह न तो अधिक काल तक निर्धनता को सहन कर सकता है और न ही सम्पन्नता को पचा सकता है। यह बात वर्तमान काल में कितनी सच साबित हो रही है, क्योंकि निर्धनता मनुष्य को दीन–हीन पशु में परिवर्तित कर रही है और धन की बाढ़ मनुष्य को बर्बर, दिशाहीन, अनुददेश्यपूर्ण काल के गाल में ढकेल रही है।

यह सच है कि हमने प्रगति तो की है। हमारी कुशलता, बुद्धिचातुर्य, तथा स्वार्थपरता अवश्य ही आज पहले से अधिक विकसित है। परंतु स्वार्थपरता इतनी अधिक है कि वह कुशलता और बुद्धचातुर्य पर भारी पड़ रही है और हमारे समाज के अग्रिम पंक्ति में पदस्थ शासक, प्रशासक, न्यायाधीश, वकील, व्यवसायी, चिकित्सक, तकनीकी तंत्र से जुड़े व्यक्ति आज भ्रष्टतम स्थिति पर हैं। हमने आवागमन तथा संचार तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति तो की है। हमने भौतिक दूरियों को कम तो किया है पर यह भी सच है कि हमारे मन की दूरियां बढी हैं। हम समाज को यदि सभ्यता के पैमाने पर आंकें तो आज हम अधिक असभ्य हुए हैं। आज मनुष्य –मनुष्य में भेद अधिक हो गया है। आज मनुष्य, मनुष्य का शोषण ही नहीं कर रहा वरन वह अपने समस्त परिवेश और पर्यावरण का शोषण करने पर अमादा है। मतभेद अधिक हुए हैं, समरसता और समझदारी कम हुई है। राग–द्वेष, ईर्ष्या के भाव अधिक हुए हैं तथा मानव मन की कलुषता में वृद्धि हुई है। मनुष्य ने मानवतावादी धर्म के लक्षणों को खो दिया है।

हम देखते हैं कि आज समाज में चरित्र की जो गिरावट आई है वही जल, थल और वायु में प्रदूषण के रूप में सभी ओर दिखाई दे रही है। प्रकृति ने तो सभी के लिए पर्याप्त स्थान और संसाधन उपलब्ध कराये हैं पर मनुष्य ही है जिसने इन संसाधनों को एक दूसरे से वंचित करके उसे निर्धन बना रखा है। इसी प्रकार हम प्रकृति को निहारे तो आज वह जिस प्रकार धूल–धूसरित है, उसमें जो विदूपता और विषमता दिखाई देती है वह मनुष्य के चरित्र–व्यवहार की स्वयं की उपज है। जबकि प्रकृति ने अपनी गोद में सब कुछ इतनी प्रचुरता से दिया है कि मानव को कुछ भी कमी नहीं है परंतु हम देखते है कि आज न तो हमें शुद्ध वायु मिल रही है और न ही शुद्ध पानी। यहाँ तक कि रासायनिक पदार्थों के प्रदूषण से हमारी धरती की उर्वरता भी समाप्त प्रायः होती जा रही है। आज मनुष्य नये–नये ऐसे कठिन रोगों से ग्रसित होता जा रहा है कि आज उसकी बहुत ही दयनीय स्थिति होती जा रही है। प्रकृति तो हमें सभी कुछ शुद्ध रूप में उपलब्ध कराती है पर यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अपने स्वयं के लिए, अपने बच्चों तथा अन्य लोगों को खिलाने के लिए भोजन पदार्थों में मिलावट का जहर घोलता है। आज संसार जिन गंभीर स्थिति से ग्रसित है वह मानवता के लिए बहुत ही चिन्ताजनक है। आज हमारी पथ्वी विध्वसंक मिसाईलों, परमाणु बमों तथा रासायनिक हथियारों के गम्भीर परिणामों की आशंका से घिरी हुई है, जिन्हें मानव ने स्वयं निर्मित किया है। धन और धर्म के नाम पर विश्व स्तर पर आपसी मारकाट मची हुई है। यह आपसी द्वेष, मनुष्य की अपनी निम्न सोच का ही परिणाम है। कभी भी कोई खनिज और रासायन आपस में मिलकर स्वयं से विध्वंसक पदार्थ या बम की रचना नहीं करते यह मनुष्य का चरित्र ही है जो उसे अधोगति की ओर ले जाने पर आमादा है।

आज आवश्यकता है एक महानायक की जो समाज को विश्वस्तर पर सही दिशा दे। जिससे हमारा व्यक्तित्व उत्तम हो और उसमें निखार आये। आज आवश्यकता है एक ऐसे महामानव कि जो अपने विचारों से संसार को अच्छी राह दिखाये और उसका मार्ग शान्ति की ओर प्रशस्त करे, जहाँ अपराधिक कार्यों की अपेक्षा सेवाभाव वाले कार्यों की प्रचुरता हो, असुरक्षा की अपेक्षा सुरक्षा का भाव अधिक हो, हमारे घर–हमारी बस्तियां, हमारी पृथ्वी गंदगी और प्रदूषण का अंबार बनने की अपेक्षा स्वच्छ, सुंदर और प्रदूषण मुक्त हो। हमारे शिक्षा संस्थान, न्यायालय, चिकित्सालय, व्यवसायिक प्रतिष्ठान न होकर उच्च चरित्र वाले, प्रकृति के सहजीवी भाव को प्रसारित करने वाले तथा निष्ठावान चरित्र के अनुगामी हो। यदि हमारा चरित्र अच्छा होगा, हमारे शिक्षार्थी चरित्रवान होगें। हमारे समाज मे शत्रुता की अपेक्षा एक दूसरे को ऊँचा उठाने एवं असहायों की सहायकता करने का पवित्र भाव ही फले फूलेगा। हमारे चिकित्सालय सेवाधर्म वाले होंगे और हमारे धर्म संस्थान व्यवसायिकता के केन्द्र न होकर सही मायने में धर्म के लक्षणों को समाज को देने वाले होंगे। धर्माचार्य और मठाधीश मात्र पौराणिक चरित्रों के किस्से–कहानी कहने वाले न होकर मनुष्य को मानवता का सही पाठ पढ़ाने वाले तथा सदाचरण को व्यवहार में लाने वाले होंगे। आज युवापीढ़ी मात्र कालयापन कर अपना जीवन नष्ट कर रही है। उसके पास न तो यथेष्ठ विचार है और न ही जीवन का कोई उद्देश्य। हम देखते हैं कि वर्तमान पीढी असीम गति से दिशाहीन दौड़ रही है और स्वयं ही अपनी हंता बन रही है। वह स्व–अनुशासन भूलकर असंयमित जीवन जीने को बाध्य है। उसकी ऊर्जा, सुख–शांति तथा लावण्यता खोती जा रही है। उसका जीवन दयनीयता और चारित्रिक दरिद्रता की ओर बढ़ रहा है। वह पूर्णतः दिशाहीन है। इस प्रकार हम पाते है कि आज की पीढ़ी को दिशानिर्देश की परम आवश्यकता है।

व्यक्तित्व निर्माण ही समाज को सही विचार और संस्कार दे सकता है। जिससे समाज में सुधारात्मक कार्यों में प्रगति हो। समाज सदैव जागृत रहे और वह सदैव सामाजिक हित के कार्य साहस और उत्साह के साथ संपन्न करे। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व निर्माण की प्रथम कड़ी हैं, जिससे हमारी जीवन शैली, वैवाहिक–संबंध, पारिवारिक स्नेह तथा एक दूसरे के प्रति कलुषविहीन भावनाओं का उत्कष्ट विकास हो सकता है। सही विचार का अभाव समाज तथा लोकतंत्र के लिए बेहद खतरनाक है, आज हम देखते हैं कि समाज जटिल समस्याओं से घिरा हुआ है। पारिवारिक प्रेम की कड़ियाँ टूट रही हैं। इस प्रकार तो मानव–मानव मे भेद बढ़ता ही जायेगा। मन का विश्वास खो जायेगा, आनंद और खुशी का अभाव होगा, साथ ही नेत्रों तथा चेहरे का तेज खो जायेगा। हम विचार रहित हो अपनी आत्मशक्ति और विश्वास भी खो बैठेंगे। समाज की प्रफुल्लता समाप्त हो जायेगी।

शेष पृष्ठ 7 पर

शिक्षक दिवस पर विशेष

राष्ट्रभक्त तथा समर्पित शिक्षक ही सुयोग्य नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं

– स्वामी आर्यवेश

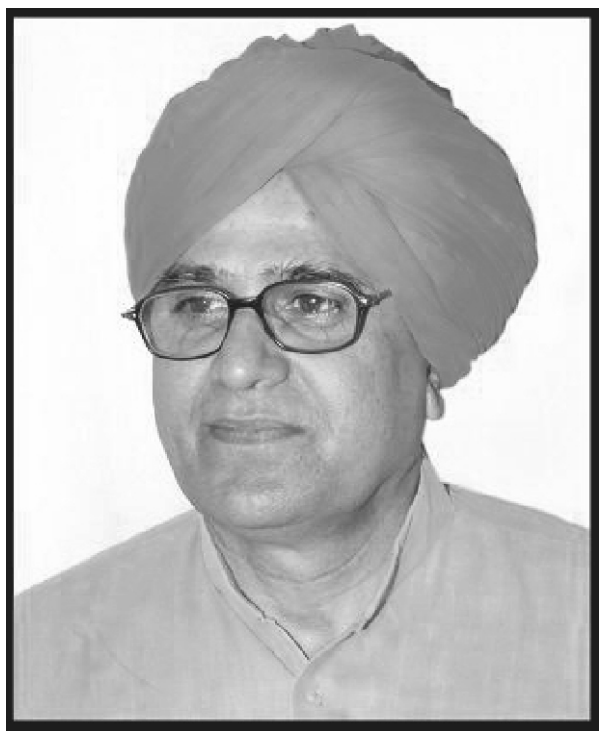

शतपथ ब्राह्मण का यह वचन ''मातृमान, पितृमान, आचार्यवान पुरुषो वेदः'' अर्थात् बालक के जीवन रूपी महल के निर्माण में माता–पिता तथा गुरु तीनों ही चतुर शिल्पकारों की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार राष्ट्र की उन्नति के तीन आधार स्तम्भ माने गये हैं। (1) आचार्य, (2) उपदेशक, (3) नेता। इन तीनों में आचार्य का स्थान सर्वप्रथम है। क्योंकि आचार्य से ही शिक्षा प्राप्त करके उपदेशक और नेताओं का निर्माण होता है। जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, पिता, आचार्य अपने उत्तरदायित्व को भली भांति निभायें तभी बच्चों में संस्कार तथा जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। दुर्भाग्य से यदि माता–पिता शिक्षित नहीं हैं तो बच्चों को सुसंस्कारित करने का कार्य आचार्य या शिक्षक पर और अधिक बढ़ जाता है। अथर्ववेद के मंत्र में आचार्य शिष्य को सम्बोधन प्रदान कर रहा है।

यनेदसो मात क तच्छेषेपिता का ताच्च यत्।

उन्मोचन प्रभोचने उभे वाचा वदामि।।

– अथर्व. 5–30–4

जो तू माता के किए प्रमाद रूप पाप से और पिता के किये गये प्रमाद रूप पाप से विद्याध्ययन रूप जागृति प्राप्त नहीं कर सका, अभी तक सोया पड़ा है तो मैं आचार्य वाणी द्वारा तुझे सन्मार्ग पर लगाता हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि शिष्य रूपी अनगढ़ पत्थर को अपनी वाणी रूपी छेनी से तराश कर सुगढ़ रूप प्रदान करने वाले कलाकार को शिक्षक या आचार्य कहते हैं। माता–पिता के द्वारा बालक का आंतरिक व सामाजिक निर्माण होता है तो वहीं आचार्य या शिक्षक अपने उपदेशों द्वारा अपने अर्जित ज्ञान के माध्यम से बालक का बौद्धिक निर्माण करता है।

आज के छात्रों का बौद्धिक एवं व्यावहारिक ज्ञान देखकर शिक्षकों की प्रतिबद्धता और निष्ठा का सहज अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसा नहीं है कि शिक्षकों द्वारा छात्रों में ज्ञान का संचार नहीं किया जा रहा लेकिन आज के शिक्षक मात्र प्राविधिक कौशल को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं जो ज्ञान देने का पूर्ण उद्देश्य न होकर मात्र उसका एक भाग है। शिक्षक का उत्तरदायित्व होता है कि वह बालक का सर्वांगीण विकास करे जिससे बच्चे के अन्दर उच्च संस्कार पैदा हों तथा वह रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, संकीर्णताओं और दुर्व्यसनों से दूर रह सके तथा उसमें प्रेम सद्भाव एवं सहयोग की भावना का उदय कर दे। लेकिन क्या आज की शिक्षा व्यवस्था और शिक्षक इस तरह का ज्ञान प्रदान कर पा रहे हैं? छात्रों में चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का अभाव जिस रफ्तार से बढ़ रहा है वह समाज के लिए चिन्ता का विषय बन गया है। हालात इतने खराब हो गये हैं कि बड़ी–बड़ी डिगरियाँ प्राप्त युवक नैतिकता और विवेक जैसे शब्दों को परिभाषित भी नहीं कर सकते तो वह युवक इन बातों को व्यवहार में कैसे उतार सकते हैं यह स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। इन सबका एक ही कारण नजर आता है वह है हमारी दूषित शिक्षा प्रणाली। अंग्रेज चले गये लेकिन मैकाले द्वारा प्रदत्त शिक्षा प्रणाली ने देश में पूरी तरह से पैर पसार लिये हैं। परिवार, समाज, राष्ट्र तथा उसके सदस्य वैसे ही होंगे जैसी वहाँ की शिक्षा प्रणाली होगी। जैसी शिक्षा वैसा समाज अथवा जैसे विद्यार्थी वैसे राजअधिकारी व कर्मचारी, क्योंकि आज शिक्षा प्रणाली का मुख्य लक्ष्य धन कमाना है। अधिकांश नागरिक समाजसेवा, राष्ट्र सेवा के स्थान पर अनैतिक रूप से अधिक से अधिक धन कमाने को ही अपने जीवन का लक्ष्य समझते हैं। अतः आज का अधिकांश पढ़ा–लिखा व्यक्ति, अधिकारी या कर्मचारी अपने ज्ञान का प्रयोग समाज सेवा या राष्ट्र सेवा में नहीं करता, अपितु वह केवल कामचोरी, हेराफेरी व रिश्वतखोरी अथवा अन्य अनियमितताओं को करने में अपनी बुद्धि को लगाना ही जीवन का लक्ष्य समझता है। क्योंकि उसे बचपन से युवावस्था तक मिली शिक्षा में विज्ञानवादी,

सेवाभावी, मानवतावादी या राष्ट्रवादी होने के संस्कार नहीं मिले। स्कूलों के अधिकतर शिक्षकों का पढ़ाने का उद्देश्य केवल मात्र धन कमाना होता है, क्योंकि वह भी उसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक बने हैं। अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली, देश को लोभवाद, कामुकतावाद, हिंसावाद, आतंकवाद तथा राष्ट्रद्रोह प्रदान कर रही है। आधुनिकता का लिवास ओढ़े हुए आज के महाविद्यालय लार्ड मैकाले की शिक्षा का धन्यवाद करने में गर्व का अनुभव करते हैं। आज की शिक्षा पाश्चात्यता की जंजीरों में जकड़ी हुई है। हमारा देश स्वतन्त्र तो अवश्य हो गया लेकिन शिक्षा अभी भी कैद है। उसमें भारतीयता के दर्शन नहीं होते। वैदिक संस्कारों को लोग भूलते जा रहे हैं। पहले बुरा काम करने से लोग डरते थे अब दिल खोलकर खुलेआम बुरे काम करते हैं। दूसरों का अहित करने, अन्यों का गला काटकर अपने लिये आमोद–प्रमोद के साधन, कोठी, कार, बंगले आदि जुटाने में नहीं चूकते उनका अपना लाभ होना चाहिए चाहे अन्य व्यक्ति, समाज, राष्ट्र का कितना ही अहित क्यों न हो जाये इस बात की उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती है। यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि वर्तमान में हमारे देश में लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली का बोलबाला बढ़ता ही चला जा रहा है। वैदिक संस्कृति, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का लोप होता जा रहा है, पश्चिमी सभ्यता पूरी तरह से हावी होती जा रही है।

यदि समाज को संस्कारित करना है, राष्ट्र का निर्माण करना है तो विशेष रूप से शिक्षा को अपनी भारतीय संस्कृति, इतिहास व प्राचीन गौरव से जोड़ना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होगा। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में जंगलों में एकान्त स्थान पर नगरों के कोलाहल से दूर रमणीक विद्याध्ययन केन्द्रों पर ज्ञानार्जन होता था जहाँ अन्य विद्याओं के साथ–साथ वेदों का ज्ञान दिया जाता था। बच्चों में चारित्रिक ज्ञान कूट–कूट कर भरा जाता था, जीवन को संस्कारित करते हुए बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाता था और गुरुकुलों से निकले छात्र बड़े होकर ऋषि, महर्षि, राष्ट्रभक्त योद्धा, महापुरुष एवं विद्वान बनते थे। परिवार व राष्ट्र का नाम ऊँचा करते थे। उनका जीवन सत्य पथानुगामी होता था। परोपकार उनका धर्म होता था, वह सदा मानवता के लिए जीते थे, अधर्म से दूर रहते थे। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम, योगीराज श्रीकृष्ण, हरिश्चन्द्र, स्वामी दयानन्द तथा अन्य महापुरुष ऐसे हुए हैं जो अपनी महानता के कारण प्रसिद्ध हुए हैं। इसके विपरीत आज की शिक्षा में चरित्र एवं संस्कार का ज्ञान नहीं दिया जाता। वेदादि शास्त्रों के ज्ञान के अभाव में भ्रष्टाचारी, अनाचारी, दुराचारी व्यक्तियों का निर्माण हो रहा है जो राष्ट्र को निरन्तर अवनति के गर्त में धकेलते जा रहे हैं।

अब जब पूरी शिक्षा व्यवस्था ही दूषित है तो इन परिस्थितियों में हमारे शिक्षकों को अत्यधिक संयमित, चरित्रवान एवं प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है। चरमराई हुई तथा दूषित शिक्षा व्यवस्था को सुधारने के लिए न केवल शिक्षक बल्कि छात्रों एवं अभिभावकों को भी अपने चरित्र एवं सोच में बदलाव लाना होगा। शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर स्वस्थ रहते हुए उत्तम कार्य करने की इच्छा जगानी होगी न केवल अपने विषय में बल्कि दूसरे विषयों का भी व्यवहारिक ज्ञान रखना होगा एवं नैतिक एवं चारित्रिक गुणों को महत्त्व देना होगा। शिक्षकों को अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए ईमानदारी से अत्यधिक परिश्रम करना होगा। क्योंकि एक सच्चा शिक्षक छात्रों में पुस्तकीय ज्ञान ही अवस्थित नहीं करता बल्कि उसके सर्वांगीण विकास के लिए प्रयत्नशील रहता है। छात्रों को आत्मशून्य होने से बचाने के लिए शिक्षकों को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ आगे आना होगा। लेकिन शिक्षकों को कर्त्तव्य परायण बनाने के लिए छात्रों को भी संयमित होना पड़ेगा। सबसे पहले तो उन्हें शिक्षकों के प्रति श्रद्धा बढ़ानी होगी, छात्रों को शिक्षकों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करना होगा। क्योंकि शिक्षक और छात्र का सम्बन्ध जो दुनियाँ में सबसे श्रद्धेय और सम्माननीय सम्बन्ध है उसे पुनर्जीवित करने की अत्यधिक आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वह ब्रह्मचर्य सिद्ध आचारवान संस्कारवान तथा योग्य हों तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास होगा और वह उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा। शिक्षक तथा सामाजिक कार्यकर्ता भी शिक्षा प्रणाली में स्वभाषा, स्वसंस्कृति तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा दें तथा सरकारों से भी माँग करें जिससे बच्चों का सही निर्माण हो सके। जब तक देश में अपनी स्वभाषा और स्वसंकृति नहीं पढ़ाई जायेगी, बच्चों को योग एवं चरित्र के पाठ नहीं पढ़ाये जायेंगे तब तक बच्चों का सही निर्माण नहीं हो सकता। चूँकि विद्यार्थियों का जीवन कहीं बनता है तो गुरुकुलों या विद्यालयों में। सही मायने में सुयोग्य, चरित्रवान शिक्षकों तथा आचार्यों के द्वारा ही विद्यार्थियों का जीवन निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है और यह सब सम्भव तभी है जब गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को महत्त्व दिया जायेगा।

– प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नई दिल्ली–2

पृष्ठ 1 का शेष

यज्ञ सामाजिक सद्भाव का एक प्रभावशाली स्रोत है

– वैद्य सत्य प्रकाश आर्य

सद्भावना यज्ञ समाज की एकता व शांति के लिए आवश्यक है

– राजेश जैन

यज्ञ से बिना भेदभाव सभी प्राणियों एवं मनुष्यों को लाभ पहुँचता है

– डॉ. सुरेन्द्र कुमार

आज धर्म का जो स्वरूप हमारे सामने है, यदि उसे ही धर्म मान लिया जाये तो मैं समझता हूँ कि इससे बड़ा अधर्म और कोई नहीं हो सकता। आज चारो तरफ धर्म के नाम पर जो वैर–वैमनस्य और पाखण्ड फैल रहा है तथा मनुष्य एक दूसरे के खून के प्यासे हो रहे हैं उसका कारण धर्म में आई विकृति ही है। भ्रमवश आज लोग मत या मजहब को ही धर्म का नाम देने लगे हैं। यही कारण है कि धर्म की विशालता एवं सार्वभौमिकता को लोगों ने समाप्त करके उसे अपने–अपने संकुचित दायरों में बांट दिया है। जबकि अब तक की सरकारे संविधान में व्यक्त की गई समानता एवं समरसता की भावना को मूर्त रूप नहीं दे पाई हैं। पूरा देश जातिवाद, सम्प्रदायवाद एवं भाषाई समस्या में बंटा हुआ है। इसी के साथ–साथ व्यापक रूप से फैल रही नशाखोरी, अश्लीलता एवं नग्नता का खुला प्रचार–प्रचार, महिलाओं पर निरन्तर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न आदि से हमारा समाज एवं राष्ट्र अन्दर से खोखला होता जा रहा है। प्रजातन्त्र में प्राप्त मत के अधिकार का प्रयोग भी आज जाति, मजहब एवं भाषा के सवाल पर किया जाता है। देश में पुनः भाईचारा, सद्भावना स्थापित करने की जरूरत है जिससे सभी आपस में मिलकर एक–दूसरे का सम्मान करते हुए देश की प्रगति में अपना–अपना योगदान दे सकें। स्वामी आर्यवेश जी ने अमर उजाला समाचार पत्र समूह को इस बात के लिए बधाई दी कि उन्होंने अपने 'माँ तुझे प्रणाम' कार्यक्रम का शुभारम्भ आज इस पवित्र यज्ञशाला में सद्भावना यज्ञ के द्वारा प्रारम्भ करने का संकल्प किया है।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजवीर सिंह जी ने कहा कि किसी भी शिक्षण संस्थान का उद्देश्य ज्ञान का विस्तार करना होता है। ज्ञान महज अक्षर ज्ञान तक सीमित नहीं होता है। ज्ञान विद्यालय की चार–दिवारियों में ही नहीं मिलता है, बल्कि इससे बाहर भी प्राप्त होता है। किताबों से बाहर का सामाजिक ज्ञान भी अपने आपमें विशेष महत्त्व रखता है। सामाजिक ज्ञान की जानकारी भी मनुष्य के लिए जरूरी है। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय पिछले 46 वर्षों से इस यज्ञ को सफल बनाने में अहम साबित हो रहा है। महर्षि दयानन्द एक महान विचारक एवं दार्शनिक थे। उनके विचारों को आत्मसात करने व दूसरों तक पहुँचने का प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में आर्य समाज व विश्वविद्यालय परिवार ने विश्वविद्यालय के दोनों प्रवेश द्वार पर ओ३म् शब्द अंकित कराने की अपील की थी, अपील के बाद यह कार्य पूर्ण भी हो गया है। ओ३म् शब्द का अपना महत्त्व है। यह मन–मस्तिष्क पर असर छोड़ता है। यह विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य निरन्तर करता रहेगा।

इस अवसर पर प्रसिद्ध नाड़ी वैद्य श्री सत्य प्रकाश आर्य जी ने कहा कि सद्भावना यज्ञ समाज व जनहित में सराहनीय कार्य है। ऐसे आयोजन समय–समय पर होते रहने चाहिए। यज्ञ हमारी परम्परा का हिस्सा है। यज्ञ के द्वारा पर्यावरण शुद्धि के साथ–साथ रोगाणुओं और कीटाणुओं को भी समाप्त करने में सहायता मिलती है। आज की आधुनिकता के चकाचौंध में हम वैदिक संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमें वैदिक संस्कृति की ओर लौटना होगा। इसी से जीवन सार्थक होगा। प्रतिदिन यज्ञ करके हम अपने आस–पास के वातावरण को शुद्ध रख सकते हैं तथा अपने आपको महामारियों से बचा सकते हैं। वैदिक संस्कृति हमको परस्पर प्रेम, सद्भाव, सौहार्द एवं शांति के साथ मिलकर रहने, मिलकर चलने, मिलकर सोचने, मिलकर बोलने और मिलकर खाने की प्रेरणा देती है। वेद का मंत्र इस दिशा में प्रेरित करते हुए कहता है कि – संगच्छध्वम् संवदध्वम् संवोमनांसि जानताम। देवा भागम् यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।

प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राजेश जैन जी ने कहा कि सद्भावना यज्ञ समाज की एकता व शांति के लिए है। समाज में ऊर्जा व एकता की जरूरत है। इसी से स्वतंत्रता का सपना साकार हुआ है। हम सबको मिलकर देशहित में कार्य करना चाहिए।

यज्ञ के आचार्य डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी ने यज्ञ के बीच में प्रेरणा देते हुए कहा कि यज्ञ की प्रक्रिया अपने आपमें सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय को सिद्ध करती है। यज्ञ में दी गई आहुतियों में हव्य पदार्थ अग्नि के सम्पर्क में आने से सूक्ष्म होकर वायुमण्डल में फैल जाते हैं और मनुष्य एवं अन्य प्राणी इसी वायुमण्डल से शुद्ध वायु और उन हव्य पदार्थों का भाग ग्रहण कर लेते हैं। ठीक इसी प्रकार हम सभी का व्यवहार एक–दूसरे के प्रति सद्भावना, सहयोग एवं समर्पण से युक्त होना चाहिए। हम एक–दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। वेदों में अनेक मन्त्रों के माध्यम से परमपिता परमात्मा ने मनुष्य मात्र को प्रेरित किया है कि सभी प्राणियों के प्रति प्रेम एवं मित्रता रखें। कार्यक्रम का समापन शांति पाठ के साथ हुआ। अमर उजाला समाचार समूह के अधिकारियों ने सभी आगन्तुक अतिथियों का पौधे भेंटकर सम्मान किया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत
यजुर्वेद भाष्य
भारी छूट पर उपलब्ध
250 रुपये मूल्य का यजुर्वेद भाष्य
मात्र 150 रुपये में दिया जा रहा है
(डाक व्यय अतिरिक्त)
(जल्दी करें ग्रन्थ सीमित मात्रा में ही उपलब्ध है)
प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विश्व भारती गुरुकुल लाढ़ौत, जिला–रोहतक, हरियाणा में

सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा किया गया ध्वजारोहण

स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका रही

– स्वामी आर्यवेश

देश के 75वें स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने विश्व भारती गुरुकुल लाढ़ौत, रोहतक, हरियाणा के प्रांगण में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया। इस अवसर पर गुरुकुल के विद्यार्थियों ने सैनिक परेड करते हुए सलामी दी और कुछ विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। गुरुकुल के निदेशक आचार्य नन्द किशोर जी ने स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी का माल्यार्पण कर स्वागत किया। गुरुकुल के संस्थापक आचार्य हरिदत्त उपाध्याय जी की उपस्थिति में स्वामी आर्यवेश जी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश के उन समस्त बलिदानियों तथा राष्ट्रभक्तों को नमन करते हुए आज हम सबको यह संकल्प करना चाहिए कि हम अपनी आजादी को अक्षुण्य बनाये रखेंगे। स्वामी जी ने कहा कि आजादी का सुख हम और आप सब भोग रहे हैं, इसके पीछे ज्ञात–अज्ञात लाखों बलिदानियों का इतिहास है।

आजादी के आन्दोलन में आर्य समाज की ऐतिहासिक भूमिका पर प्रकाश डालते हुए स्वामी जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द दण्डी जी ने 1857 की क्रांति तथा उसके पश्चात् आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न रियासतों के राजाओं एवं प्रमुखों को प्रेरित किया था। स्वयं महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने अपने परम शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा को लन्दन भेजा और वहाँ श्यामजी कृष्ण वर्मा ने सभी क्रांतिकारियों को इंडिया हाउस के माध्यम से संगठित किया। स्वामी दयानन्द जी महाराज की प्रेरणा से ही शहीदे आजम भगत सिंह का पूरा परिवार आर्य समाज की विचारधारा से ओत–प्रोत हो गया था। भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह जी ने स्वामी दयानन्द जी से यज्ञोपवीत लिया था। वे दैनिक यज्ञ किया करते थे और उन्होंने अपने पूरे परिवार को राष्ट्रीय आन्दोलन में झोंक दिया था। इसी प्रकार शेरे पंजाब लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द, राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँन आदि क्रांतिकारी भी आर्य समाज की भट्ठी में तपकर निकले थे। आर्य समाज के प्रभाव से डी. ए.वी. कॉलेज लाहौर तथा गुरुकुल कांगड़ी क्रांति के मुख्य केन्द्र बन गये थे।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को कौन नहीं जानता जिन्होंने चांदनी चौक में अंग्रेजों की पुलिस के सामने छाती खोलकर ललकारा था – चलाओ गोली। तुम्हारी गोली पहले मेरी छाती में लगेगी, उसके बाद मेरे पीछे आ रही देश की निहत्थी जनता की छाती पर लगेगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही जलियावाला बाग नरसंहार के पश्चात् अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन का पूरा भार अपने कंधों पर उठाया था। उन्होंने यह दायित्व उस समय लिया जब कांग्रेस का कोई भी नेता इस कार्य के लिए आगे आने का साहस नहीं कर पा रहा था। आर्य समाज के हजारों वीरों ने निजाम हैदराबाद के विरुद्ध आन्दोलन का बिगुल बजाकर

अंग्रेजों को एहसास करा दिया था कि उनका समय अब भारत में समाप्त होने वाला है, क्योंकि आर्य समाज के क्रांतिवीर अपने सिर पर कफन बांधकर बड़े से बड़ा बलिदान देने के लिए आन्दोलन में कूद पड़े थे। स्वामी जी ने कहा कि आज दुर्भाग्य है कि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में आर्य समाज की भूमिका का कहीं वर्णन नहीं है, न ही पूरे इतिहास के पन्नों पर कहीं हैदराबाद के ऐतिहासिक आन्दोलन का वर्णन है जिस आन्दोलन के कारण निजाम को हैदराबाद रियासत भारत में विलय करनी पड़ी थी।

आर्यों का आह्वान करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि न केवल स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका एवं योगदान को नजरअंदाज किया जा रहा है बल्कि युग प्रवर्तक, इस युग के महान दार्शनिक, क्रान्तद्रष्टा संन्यासी, आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की भी हर स्तर पर योजनाबद्ध तरीके से उपेक्षा की जा रही है। भारत के समस्त विश्वविद्यालयों का नियंत्रण जिस मुख्य संस्था के पास है उसका नाम है विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी)। जो केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य करता है। इसी आयोग ने गत दिनों 19वीं और 20वीं शताब्दी के दार्शनिकों की एक सूची अपने वैबसाईट पर अपलोड की जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम शामिल नहीं किया गया। सार्वदेशिक सभा की ओर से हमने केन्द्रीय शिक्षामंत्री एवं यू.जी.सी. के चेयरमैन को पत्र लिखकर पूछा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान दार्शनिक, उद्भट्ट वेदज्ञ, क्रांतिकारी समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रेरणास्रोत महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का नाम इस सूची में क्यों नहीं है, तो उनका आज तक कोई उत्तर नहीं आया। इस सम्बन्ध में दैनिक समाचार पत्रों में वक्तव्य देकर तथा कई सांसदों एवं मंत्रियों के द्वारा यू.जी.सी. के चेयरमैन को टेलीफोन करवाकर हमने प्रयास किया कि वे अपनी गलती को सुधार लें। हमने उनसे इतना ही निवेदन किया था कि यदि गलती से स्वामी दयानन्द जी का नाम छूट गया है तो आप अपनी सूची को संशोधित करके स्वामी दयानन्द जी का नाम सम्मिलित करके नई सूची वैबसाईट पर अपलोड करें, किन्तु अभी तक कोई प्रगति नहीं हुई है और हमें पूरा संदेह है कि ऋषि दयानन्द को हर स्तर पर उपेक्षित एवं नजरअंदाज करने के पीछे सोची–समझी चाल अथवा षड्यन्त्र है। आचार्य नन्दकिशोर जी एवं आचार्य हरिदत्त उपाध्याय जी ने स्वामी जी का आभार व्यक्त किया और कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा पद्धति गुरुकुल प्रणाली है

– सुखदेव व्यास

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एक पूर्ण शिक्षा व्यवस्था है, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अगर शिक्षा दी जाती है तो 24 वर्ष में ही शिक्षित युवा तैयार हो जाता है। प्राचीन युग में प्रत्येक गाँव में गुरुकुल हुआ करते थे, उसमें स्थानीय भाषा या संस्कृत में शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर अपने स्वार्थ के लिये अपनी अविकसित शिक्षा पद्धति लागू कर दी और यह कहते हैं कि भारतीयों के पास कोई शिक्षा पद्धति नहीं थी, अंग्रेजों के कारण ही भारतवासी शिक्षित हुए हैं। इसके विपरीत अंग्रेजों ने हमारी विकसित शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर अपनी प्रणाली लागू की।

सन् 1931 ई. में गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी लंदन गये थे। उस समय अंग्रेज अधिकारियों ने गाँधी जी से कहा था– यदि अंग्रेज भारत नहीं आते तो भारत की शिक्षा व्यवस्था बन नहीं पाती। गाँधीजी को यह बात सही नहीं लगी लेकिन उनके पास ऐसे तथ्य नहीं थे कि वे उसका जवाब देते। भारत आने पर उस समय के विख्यात इतिहासकार धर्मपाल जी से कहा था कि तुम भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में प्रमाण एकत्रित करो और उसके आधार पर बताओ कि भारत की शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के आने के पूर्व कैसी थी?

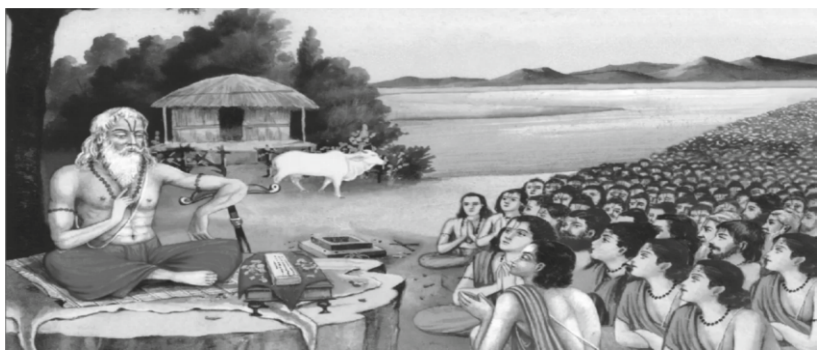

गाँधी जी के कहने पर इतिहासकार धर्मपाल जी लंदन, फ्रान्स और जर्मनी आदि देशों और भारत में प्राचीन इतिहास की खोज करने में संलग्न हो गये और वे 40 वर्ष तक अध्ययन और अध्यापन करते रहे तथा अनेक दस्तावेज एकत्रित किये, उसका उन्होंने पूर्ण विश्लेषण किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि– अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत की शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही श्रेष्ठ थी। भारत के प्रत्येक परिवार में शत प्रतिशत साक्षरता थी और भारतीय जन अपने बच्चों को शिक्षित करने में अपना तन–मन–धन खर्च करते थे।

विलियम एडम मैकाले के गुरु थे, मैकाले भारत की शिक्षा पद्धति के विषय में जो खोज करते थे, उसे वे अपने गुरु विलियम एडम के पास भेजते थे। उसे आधार बनाकर विलिम एडम ने भारत की शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर 1780 पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की उस रिपोर्ट को ब्रिटिश संसद में पेश किया गया। 2 फरवरी सन् 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में मैकाले ने भारतीय शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर भाषण दिया और सांसदों ने उनसे प्रश्न भी किये। उनका उत्तर भी मैकाले द्वारा दिया गया। ये सभी रिकार्ड रूप में अभी तक सुरक्षित है। मैकाले ने कहा था :–

1. मैंने पूरा भारत देखा, लेकिन भारत देश में किसी भी स्थान पर भिखारी देखने को नहीं मिला, भारत इतना समृद्ध है।

2. सूरत शहर में जितनी सम्पत्ति है, उतनी यूरोप में सभी शहरों की सम्पत्ति भी नहीं है अर्थात् भारत का शहरी इलाका व्यापार धंधों में इतना समृद्ध था कि यहाँ किसी प्रकार की बेरोजगारी नहीं थी।

3. भारत में जितना भी धन वैभव सम्पत्ति है, वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के कारण है। जिसका तात्पर्य है शिक्षा रोजगार परक और योग्यता पर आधारित होने के कारण यह समृद्धि थी।

4. भारत में लगभग शत प्रतिशत साक्षरता है। दक्षिण भारत में साक्षरता १०० प्रतिशत है। दक्षिण भारत अर्थात् कर्नाटक, तेलंगाना, तमिलनाडु शत प्रतिशत, उत्तर भारत में लगभग 82 प्रतिशत, मध्यभारत में 87 प्रतिशत साक्षरता है। मैं कह सकता हूँ सम्पूर्ण भारत साक्षर है अर्थात् यहाँ पर कोई अनपढ़ नहीं।

5. भारत में 7 लाख 32 हजार गाँव हैं जहाँ से रेवेन्यू प्राप्त होता है और कोई भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ गुरुकुल या स्कूल न हो। यहाँ स्कूलों को गुरुकुल कहा जाता है। इससे यह सिद्ध होता है कि इन गुरुकुलों में पढ़ाने वाले ब्राह्मण विद्वान् और गुरु की योग्यता वाले थे।

6. गुरुकुलों में 200 से 20000 हजार तक छात्र पढ़ते हैं, जिसमें मोनिटोरियम शिक्षण पद्धति है, यही कारण है यहाँ से निकलने वाला छात्र सब विषयों में पारंगत होता था।

7. गुरुकुलों में विद्या और शिक्षा दोनों प्रदान की जाती है। नैतिकता, आध्यात्मिकता, न्याय आदि को सिखाना विद्या है, गणित, रसायन शास्त्र, विज्ञान आदि को सिखाना शिक्षा है। इससे यही लगता है मैकाले ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अध्ययन किया था।

8. गुरुकुलों में 8 विषयों गणित, खगोलशास्त्र, धातु विज्ञान, इंजीनियरिंग, संगीत, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, भौतिक शास्त्र पढ़ाये जाते हैं। एक विषय पूर्ण होने पर दूसरा विषय पढ़ाया जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि गुरुकुल से निकलने वाला छात्र विद्वान् होकर ही निकलता है।

9. भारत में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा होती थी। ऐसे गुरुकुलों की संख्या 15800 सन् 1835 तक थी।

ब्रिटेन के तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने मैक्समूलर की रिपोर्ट के बाद स्वीकार किया कि भारत पूर्ण शिक्षित देश है। भारत में तब 7 लाख 32 हजार से भी अधिक स्कूल थे इसके विपरीत ब्रिटेन में मात्र 240 स्कूल थे।

गाँवों के गुरुकुलों के साथ ही लड़कियों को पढ़ाने के लिए अलग गुरुकुल थे। सह शिक्षा का चलन नहीं था। लड़कियों के स्कूल में लड़कियाँ, महिलायें ही शिक्षा देती थीं। गुरुकुल भी लड़के–लड़कियों के दूरस्थ रहते थे। जहाँ पर पुरुषों के जाने पर प्रतिबन्ध रहता था और लड़कों के गुरुकुलों में महिलायें प्रतिबन्धित रहती थीं। मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि भारत को यदि गुलाम बनाना है तो उसकी शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जावे। इसी आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा अधिनियम द्वारा स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने को गैरकानूनी तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पद्धति लागू कर दी।

अब हमारा देश स्वतंत्र है और 70 साल से अधिक हो चुके हैं। फिर भी हम अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं। हम भारत की स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देकर देश में बेरोजगारी में वृद्धि कर रहे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही समृद्ध थी और देश में 100 प्रतिशत साक्षरता थी। यह हमारा दुर्भाग्य था कि 100 प्रतिशत साक्षरता देश की थी उसे 17 प्रतिशत साक्षर अंग्रेज ध्वस्त कर चले गये। जब हमारे देश में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की व्यवस्था थी तब हमारा देश विकसित था और आज हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ कर विकासशील देश की श्रेणी में ही चल रहा है, आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश की जनता पुनः प्राचीन शिक्षा पद्धति की ओर लौटे और अपने स्तर पर 7 लाख 32 हजार गाँवों में अपने–अपने गुरुकुल चलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर देश के विकास में अपना योगदान देवे।

– अनन्त सुन्दरम् भवन,
जहाज गली उज्जैन (म.प्र.)

औषधीय गुणों से भरपूर – तुलसी

तुलसी को हमारे देश में बहुत गुणकारी और औषधीय पौधा माना जाता है। तुलसी कई बीमारियों में रामबाण इलाज करती हैं इसके पत्ते में इतने गुण हैं कि बुखार, टायफाइड, कफ, खांसी पाचन संबंधी समस्याओं में भी राहत देती है। हम आपको इसके अनोखे फायदों के बारे में बताएंगे। अगर आप रोज खाली पेट तुलसी का पानी पीते हैं तो यह आपके शरीर को न केवल फिट रखती है ब्लकि कई गंभीर बीमारियों से भी बचाती हैं।

शरीर डिटॉक्सीफाई करती है तुलसी

रोजाना तुलसी के पत्तों का सेवन करने से शरीर डिटॉक्सीफाई होता है। इसके साथ ही तुलसी शरीर के तापमान को भी कंट्रोल में रखता है। तुलसी के पत्तों का सेवन करने से शरीर का कोलेस्ट्रोल भी नहीं बढ़ता। अगर मॉनसून में आप हल्दी और तुलसी का काढ़ा पीते हैं तो यह आपकी इम्यूनिटी को बढ़ाता है इसके साथ ही गले में खराश की समस्या को भी दूर करता है।

रोज सुबह तुलसी का पानी पीने से मिलते है यह अनोखे फायदे

- सर्दी–जुकाम और गले में खराश दूर होती है।
- डायबिटीज के मरीजों के लिएतुलसी का पानी पीने बहुत ही फायदेमंद है। इससे शुगर लेवल कंट्रोल में रहता है।
- नियमित रूप से तुलसी का पानी पीने से शरीर डिटॉक्सीफाई होता है।

- रोज सुबह तुलसी का पानी पीने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।
- तुलसी का पानी पीने से पेट की समस्या दूर होती है।
- कब्ज और लूज मोशन की समस्या से भी राहत मिलती है।
- रोज सुबह खाली पेट तुलसी का पानी पीने से वायरल इंफेक्शन दूर रहता है।

पेट की समस्याओं में कैसे फायदेमंद है तुलसी

- पेट में एसिडिटी को दूर करने के लिए रोजाना तुलसी के दो से 3 पत्ते खाएं
- नारियल के पानी में तुलसी के पत्तों का रस और नींबू मिलाकर पीएं इससे भी राहत मिलती है।
- चाय या काढ़े में तुलसी को मिलाकार पीने से पाचन संबंधी समस्या दूर रहती है।
- खाने में भी तुलसी का रस शामिल करने से की गंभीर बीमारियां दूर रहती हैं।

शिष्य और आचार्य (गुरु)

– सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए.एल.टी., डी.बी. कालेज, गोरखपुर

शिक्षा के लिए माता–पिता के बाद गुरु का महत्त्व है। गुरु का स्थान अनेक दृष्टियों से माता–पिता से भी अधिक माना गया है। पाँच वर्ष के बालक को गुरुकुल में गुरु के आश्रम में भेजा जाता था। वहाँ उसका 'उपनयन' संस्कार होता था। 'उपनयन' का अर्थ है उसके समीप पहुँचना, उसके अत्यन्त निकट होना। उपनयन संस्कार के विषय में लिखा है 'आचार्य उपनयमानों ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः तं रात्रीस्तिस्रः उदरे बिभर्ति।। अर्थात् उपनयन संस्कार करते हुए मानो आचार्य माता बनकर ब्रह्मचारी को तीन रात तक अपने गर्भ में धारण करता है। इस गुरु रूपी माता के गर्भ के अन्दर ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य की ओर प्रवृत्त होता है। 'ब्रह्मचारी' शब्द का अर्थ है 'ब्रह्मणि चरतीति ब्रह्मचारी।' 'ब्रह्म' का अर्थ है 'महान्'। जीवन में छोटे से बड़े होते जाना, संकुचित से विशाल होते जाना, अपने क्षेत्र को बढ़ाते जाना, आगे ही आगे चलते जाना ही 'ब्रह्मचर्य' है। इसका संकुचित अर्थ है वीर्य रक्षा करना।

बालकों के समान बालिकाओं को भी शिक्षा का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। यज्ञ में यजमान के साथ उसकी पत्नी भाग लेती थी। वेद के मंत्रों का अर्थ करने वाली वे ऋषिकायें भी होती थीं, ब्रह्मवादिनी होती थीं। वे सब गुरुओं के समीप रह कर ही ज्ञान प्राप्त करती थीं।

यह शिक्षा का कार्य करने वाले व्यक्ति आचार्य या गुरु कहलाते थे। 'आचार्य' शब्द का अर्थ है – 'आचारं ग्राहयतीति' आचार्यः। जो आचार विचार बनाये वह आचार्य कहलाता था आचार्य का काम विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण होता था। वह विद्यार्थी के अन्दर सदाचार की स्थापना करता था। विद्यार्थी को 'छात्र' कहा जाता था। 'छात्र' शब्द का अर्थ है जिसे छाया जाये, आच्छादित किया जाये, सब प्रकार के विघ्न और बाधाओं से उसे बचाया जाये। विद्यार्थी को 'अन्तेवासी' भी कहा जाता था। अन्तेवासी शब्द का अर्थ होता है जो गुरु के अन्दर बसता हो। गुरु का सम्बन्ध केवल अपनी आर्थिक समस्या का हल ही नहीं होता था परन्तु वह उसे अपने हृदय में रखता था। इस प्रकार उस समय गुरु और शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त पवित्र और प्रेममय होता था। गुरु उस विद्यार्थी को उसके जीवन के लक्ष्य की ओर ले जाता था। शिक्षा का लक्ष्य क्या है? यह एक विचारणीय विषय है। शिक्षा के उद्देश्य पर विचार करने से पूर्व मानव जीवन के उद्देश्य पर विचार करना होगा और मानव जीवन का उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है। अतः शिक्षा का उद्देश्य स्वभावतः उस मानव जीवन के उद्देश्य प्राप्ति के योग्य मनुष्य को बनाना होगा। मानव जीवन का उद्देश्य आनन्द प्राप्ति है और वह मुक्ति और मोक्ष प्राप्त करने पर ही हो सकती है। अतः मोक्ष प्राप्त करना मानव का उद्देश्य हुआ। और इस मोक्ष का प्रदाता आचार्य और गुरु है। कबीर ने इस बात को ध्यान में रखकर गुरु को भगवान् से भी अधिक महत्त्व दिया है और लिखा है –

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागूं पायं।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो दिखाय।।

यदि हमें एक श्रेष्ठ गुरु की प्राप्ति हो जाये तो जीवन का इससे बढ़कर और क्या सौभाग्य हो सकता है?

सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपकार।
लोचन अनन्त उघाड़िया, अनन्त दिखावण हार।।

प्राचीन काल में गुरुकुलों को समाज में अत्यधिक आदर और सम्मान प्राप्त था। प्रत्येक आचार्य अपना कर्त्तव्य समझता था कि प्राचीन काल से आ रहे विद्या रूपी धन को देश तथा जाति के लिए सुरक्षित रखे। इसीलिए जहाँ शिष्य गुरु की तलाश किया करते थे वहाँ गुरु भी योग्य शिष्यों की तलाश में रहते थे। तैत्तिरीय उपनिषद् (1–4–3) में लिखा है कि जैसे पानी नीचे को बहता है, जैसे महीना संवत्सर के पीछे भागता है वैसे मुझे ब्रह्मचारी प्राप्त हों।

विद्यार्थी की शिक्षा की ओर ध्यान देना गुरु का कार्य होता था और सबसे पहले 'सादा जीवन उच्च विचार' का आदर्श रखने के लिए उसे सादी पोशाक में रखा जाता था। विद्यार्थी के शरीर पर चर्म अजिन नीचे के भाग में सन आदि का 'वस्त्र' हाथ में दण्ड, कमर में मेखला, कन्धे पर यज्ञोपवीत सिर के बाल या तो मुंड़वाये होते थे या रखवाये होते थे। उपनयन के बाद वेदारम्भ संस्कार होता था। उस समय आचार्य विद्यार्थी को कहता था – वेद का अध्ययन करना, ब्रह्मचर्य धारण करना, आचार्य की धर्मयुक्त आज्ञा का पालन करना, क्रोध और झूठ छोड़ देना, मैथुन मत करना, गदेलों पर मत सोना, गाना बजाना, नाचना, गन्ध लगाना सुरमा लगाना आदि ठीक नहीं। अति स्नान, अति भोजन, अति निद्रा, अति जागरण, निन्दा, लोभ, मोह, भय, शोक छोड़ देना, रात्रि के पिछले पहर में उठ जाना और आवश्यक शौच, दन्त धावन, स्नान, सन्ध्योपासन, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना उपासना और योगाभ्यास करना, मांस, मदिरादि सेवन मत करना, बैलादि की सवारी न करना, लघुशंका के बिना इन्द्रिय स्पर्श न करना, वीर्य रक्षा करके ऊर्ध्वरेता बनना, वीर्य को शरीर में खपाना, अति अम्ल, अति कषाय, क्षार तथा रेचनद्रव्यों का सेवन न करना, विद्या के ग्रहण में लगे रहना, सुशील बनना, थोड़ा बोलना, आचार्य का आज्ञाकारी होना यो विद्यार्थी के नित्य धर्म हैं।

इन सब बातों को देखकर ऐसा लगता है कि चरित्र निर्माण और शिक्षा दोनों ही विद्यार्थी को सिखाना आचार्य का कर्त्तव्य होता था।

इसके बाद विद्यार्थी को विभिन्न विषयों की उत्तमता के साथ शिक्षा दी जाती थी और शिक्षा समाप्त होने के बाद विद्यार्थी का दीक्षान्त संस्कार होता था और उसके बाद वह अपनी जीविकोपार्जन के साथ समाज सेवा के कार्य में जुट जाता था।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

पृष्ठ 2 का शेष

व्यक्तित्व निर्माण

आवश्यकता है एक वैचारिक और सुधारात्मक, सामाजिक निर्माण के आंदोलन की और वह मात्र संभव है सामाजिक चरित्र के उत्थान से। हमारा चरित्र ही हमारा व्यक्तित्व है। हम जो दिखाई देते हैं वही हम हैं, विद्वानों ने कहा है कि "किसी व्यक्ति का पूरा स्वभाव तथा चरित्र ही उसका व्यक्तित्व कहलाता है।" आप जिस प्रकार के व्यक्ति हैं, वही आपका व्यक्तित्व है और वह आपके आचरण संवेदनशीलता तथा विचारों से व्यक्त होता है। प्रश्न यह है कि सदाचरण तथा संवेदनशीलता समाज में कैसे प्रसारित हों, क्योंकि यही है जिनसे व्यक्तित्व निर्माण होता है। यह मनुष्य का चरित्र ही है जिससे वह अपने इतिहास का निर्माण करता है। वह इस संसार में अपने अस्तित्व की शैली को अंकित कर जाता है। यही मात्र उसकी नेकनामी तथा अमरता का एक माध्यम है। यह उसकी प्रत्येक उपलब्धि से ऊपर है। "मनुष्य वही बनता है जो वह बनना चाहता है", यह अकाट्य सत्य है। उसका संसार भी वैसा ही बनता है, जैसे उसके संस्कार होते हैं। इस प्रकार मनुष्य अपने पीछे वैसा ही इतिहास छोड़ जाता है जैसा उसका चरित्र होता है, क्योकि किसी भी व्यक्ति के संस्कारों की समष्टि, उसकी सभी मानसिक वृतियों का संकलन ही उसका चरित्र है। अच्छे विचारों तथा संस्कारों से ही उसका चरित्र अच्छा होता है।

इस प्रकार हम देखते है कि हमारा व्यक्तित्व हमारे संयमित आचरण पर निर्भर है और हमारा आचरण हमारे संस्कारों पर तथा संस्कार विचारों पर निर्भर है। संयमित मन हमारे मित्र के समान आचरण करता है और असंयमित मन एक शत्रु की भांति। यदि मन तथा इन्द्रियां अनुशासित और संयमित हैं तो मनुष्य जीवन के लक्ष्य तक पहुँच सकता है। व्यक्ति की भावनाएँ जितनी अनुशासित तथा संयमित होगी उसका व्यक्तित्व भी उतना ही स्वस्थ और उच्च होगा। इस प्रकार हम पाते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य को तभी प्राप्त कर सकता है जब उसका चरित्र उत्तम हो और चरित्र की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है कि उसके विचार, संस्कार, और व्यवहार उत्कृष्ट हों। इसलिये अपने भविष्य के निर्माण के लिए हमें वर्तमान में अधिक श्रम और अधिक शुद्धतापूर्ण जीवनशैली अपनानी होगी, क्योंकि यह सत्य है कि भूतकाल ने वर्तमान का निर्धारण किया है, हमारे वर्तमान विचार तथा व्यवहार हमारा भविष्य निर्धारित करेंगे। यह व्यक्तित्व विकास को नियंत्रित करने वाला मूलभूत सिद्धान्त है। आज आवश्यकता है कि हम छोटे तथा साधारण कार्य को भी इतनी प्रतिबद्धता से सम्पन्न करें कि उसके परिणाम से हमारी उत्कृष्टता प्रकट हो।

– ए.एस. 302, सुमंगल अपार्टमेंट, लिंक रोड, बिलासपुर (छ.ग.)

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के विश्वविख्यात संन्यासी, मानव अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के पुरोधा बेजुबान बंधुआ मजूदरों के मसीहा पूज्य स्वामी अग्निवेश जी की स्मृति में 11 से 21 सितम्बर, 2021 तक देश के विभिन्न भागों में कार्यक्रम होंगे आयोजित

मुक्त बंधुआ मजदूरों को किया जायेगा सम्मानित

विश्वविख्यात आर्य संन्यासी, मानव अधिकारों एवं सामाजिक न्याय के पुरोधा, बेजुबान बंधुआ मजदूरों के मसीहा और पूरे विश्व में दासता, अन्याय, असमानता एवं शोषण के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने वाले स्वामी अग्निवेश जी की प्रथम पुण्यतिथि 11 सितम्बर, 2021 को दिल्ली में एक विशेष स्मृति सभा के रूप में मनाई जायेगी, उसके पश्चात् 12 सितम्बर से 20 सितम्बर, 2021 तक हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश सहित अन्य प्रान्तों में भी स्मृति सभाओं का आयोजन किया जायेगा। 21 सितम्बर 'विश्व शांति दिवस' एवं स्वामी अग्निवेश जी के जन्मदिवस के अवसर पर अग्निलोक आश्रम दमदमा रोड, ग्राम–बहलता, जिला–गुरुग्राम, हरियाणा में विशेष स्मृति सभा आयोजित होगी। इन सभी कार्यक्रमों में विशेष रूप से उन मुक्त बंधुआ मजदूरों को सम्मानित किया जायेगा। जिन्हें स्वामी अग्निवेश जी ने गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराकर आजादी का जीवन जीने का अवसर प्रदान किया और उन्हें पुर्नवासित करवाया। इन कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी प्राप्त करने के लिए बंधुआ मुक्ति के केन्द्रीय कार्यालय – 7, जन्तर–मन्तर रोड, नई दिल्ली के दूरभाष नम्बर–011–23367943 पर सम्पर्क करके आप अपने निकट आयोजित होने वाले कार्यक्रम में सम्मिलित होवें और स्वामी अग्निवेश जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके संघर्षों से प्रेरणा प्राप्त करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष

प्रो. विट्ठलराव आर्य
संयोजक

स्वामी अग्निवेश स्मृति आयोजन समिति

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रमुख व्यायाम शिक्षक श्री शिव कुमार आर्य के अनुज श्री योगेन्द्र कुमार आर्य का असामयिक निधन

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी आदित्यवेश जी शांति यज्ञ में हुए सम्मिलित

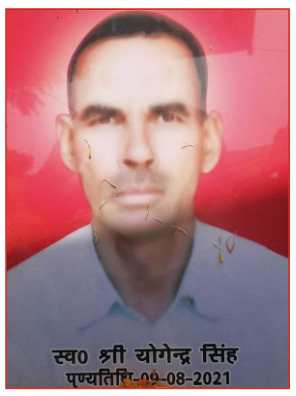

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रमुख व्यायाम शिक्षक और आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शिव कुमार आर्य ग्राम सबगा, जिला–बागपत, उत्तर प्रदेश के अनुज श्री योगेन्द्र कुमार आर्य जी का गत दिनों असामयिक निधन हो गया। उनकी आयु लगभग 47 वर्ष की थी। श्री योगेन्द्र कुमार खेत में ईख (गन्ना) बांधने का कार्य कर रहे थे, अचानक बिजली का तार टूटकर उनके ऊपर गिरा और करंट लगने से उनकी मृत्यु हो गई। स्व. श्री योगेन्द्र कुमार के शांति यज्ञ में 15 अगस्त, 2021 को उनके निवास ग्राम सबगा में बड़ी संख्या में क्षेत्र के प्रतिष्ठित लोग एकत्रित हुए। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी आदित्यवेश जी भी शोक संतप्त परिवार को सांत्वना देने के लिए शांति यज्ञ में पहुँचे। यज्ञ श्री योगेन्द्र आर्य छपरौली के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी उपस्थित सम्बन्धी एवं परिवारजनों ने आहुति प्रदान कर दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की।

इस अवसर पर स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए कहा कि भाई योगेन्द्र की असामयिक मृत्यु परिवार के लिए पहाड़ के समान दुःख देने वाली घटना है। हम सब लोग दुःख की इस घड़ी में परिवार के साथ अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ दिवंगत आत्मा की शांति की कामना की वहीं शोक संतप्त परिवार का ढांढस बंधाते हुए उनके प्रति अपनी गहरी सांत्वना व्यक्त की। स्वामी जी ने कहा कि ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था से हम सब बंधे हैं और मृत्यु एक शाश्वत सत्य है जो प्रत्येक चेतन जीवात्मा को स्वीकार करनी पड़ती है। कब किसकी जीवन यात्रा समाप्त होगी यह हम अल्पज्ञ मनुष्यों की समझ से परे है। यह परमपिता परमात्मा के ज्ञान में ही है। अतः इस दुःख को भूलने के लिए हमें उस ईश्वर की शरण में ही जाना चाहिए। ईश्वर न्यायकारी है और वही हमें शक्ति देगा, जिससे हम इस असह्य दुःख को भुलाकर अपने जीवन को फिर से गति प्रदान कर सकें। श्रद्धांजलि देने वालों में सर्वश्री जय कुमार सदस्य जिला पंचायत बागपत, ऋतुदमन आर्य मंत्री जिला सभा बागपत, हरपाल सिंह आर्य ग्राम निरपुड़ा, रामपाल शास्त्री, चन्द्रदेव शास्त्री एवं बलजीत सांगवान मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली, धर्मेन्द्र कुमार आर्य छपरौली, अवनीश आर्य, राजेन्द्र आर्य एवं मास्टर राजेन्द्र आर्य रठौड़ा, भारत कुमार बड़ौली आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री शिवकुमार आर्य ने परिवार की ओर से सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।